ToB बालमंच

मासिक अप्रेल- 2025 नन्हीं कलम से.... ✍

प्रवेशोत्सव विशेषांक

इस अंक में पढ़ें

खुश होने पर आँसू निकल जाते हैं, क्यों ?

प्रधान संपादिका :- रूबी कुमारी
उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)

अंक- 38

सम्पादक :- त्रिपुरारि राय
म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)

प्रधान संपादिका की कलम से

प्यारे बच्चों,

बाल कलाकारों के उत्कृष्ट क्रियाकलापों, रचनाओं, गतिविधियों को समर्पित "ToB बालमंच" का 'प्रवेशोत्सव' विशेषांक प्रकाशित करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। बच्चों प्रवेशोत्सव का मतलब है, नए छात्रों का स्कूल में स्वागत करना। यह शैक्षणिक सत्र के पहले दिन मनाया जाता है।

यह दिन हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है,जब पहली कक्षा में आपके नन्हे कदम प्रवेश करते हैं। वह हमारे लिए किसी बड़े उत्सव से कम नहीं होता है। साथ ही बहुत जिम्मेदारियों से भरा हुआ समय होता है वह।आप हमारे देश के उज्जवल भविष्य हैं।अतः प्रवेशोत्सव जैसे बड़े उत्सव के जरिए हमें अपने देश के भविष्य को संवारने और सजाने का सुनहरा अवसर प्राप्त होता है।साथ ही पहली कक्षा के अलावा अन्य कक्षाओं के बच्चे भी अगली कक्षा में प्रवेश करते हैं। आपके ऊपर भी कई जिम्मेदारियां होती हैं। आप नई कक्षा में प्रवेश कर नई ऊर्जा के साथ अपने प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने में लग जाते हैं। इस प्रकार यह प्रवेशोत्सव हम सबों के लिए बड़े ही हर्षोल्लास का उत्सव होता है। इस प्रवेशोत्सव के माध्यम से आप में नए सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना ही हमारा मुख्य लक्ष्य है। तो बच्चों आइए और अपनी प्रतिभा को दोगुनी ऊर्जा के साथ उजागर कीजिए ताकि आपके अंदर छिपी प्रतिभा को उत्कृष्ट पहचान मिल सके।

मुझे उम्मीद है की आप हमारी अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे। यह अंक आपको कैसा लगा? आपके मन की बातों को आप ईमेल या व्हाट्सएप के माध्यम से अवश्य भेजें। हम इसे भी बालमन नामक स्थाई स्तंभ के रूप में प्रमुखता से प्रकाशित करेंगे ।

हमारे देश के नौनिहालों और बालमंच की उज्जवल भविष्य की कामना के साथ.....

रूबी कुमारी
प्रधान संपादिका,ToB बालमंच
उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)

सम्पादकीय

प्यारे बच्चों,

खुश रहो....

बालमंच के अप्रैल माह के इस अंक में आपके विद्यालय में नए वर्ग में प्रवेश हेतु **प्रवेशांक विशेषांक** में आप सभी का हार्दिक स्वागत है। नया सत्र, नई कक्षा, और नए सपनों के साथ एक नई शुरुआत का समय है। यह समय होता है नए उत्साह, नई आशाओं और ढेर सारी संभावनाओं के साथ अपने ज्ञान यात्रा को आगे बढ़ाने का।

हर कक्षा में हम कुछ नया सीखते हैं, अपने अनुभवों से समृद्ध होते हैं और खुद को बेहतर बनाने की ओर कदम बढ़ाते हैं। इस विशेषांक में हमने आपको नई कक्षा में प्रवेश के अवसर पर प्रेरित करने वाले लेख, कहानियाँ, कविताएँ और चित्रों को स्थान दिया है, जो न केवल आपकी सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करेंगे बल्कि आपके मन में आत्मविश्वास भी जगाएँगे।

बालमंच हमेशा से बच्चों की कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता को प्रकट करने का एक सुंदर मंच रहा है। हमें गर्व है कि हमारे पाठक न केवल अच्छे विद्यार्थी हैं, बल्कि बेहतरीन कलाकार, लेखक और विचारशील बालक भी हैं। इस अंक में प्रकाशित आपकी पेंटिंग्स, ड्रॉइंग्स, कविताएँ और कहानियाँ एक नए सत्र की उमंग और ऊर्जा को दर्शाती हैं।

हम आशा करते हैं कि यह प्रवेशांक न केवल आपको नई शुरुआत के लिए प्रेरित करेगा बल्कि सीखने के प्रति आपके उत्साह को और भी बढ़ाएगा। याद रखें, हर दिन एक नया अवसर है – कुछ नया सीखने, खुद को बेहतर बनाने और अपने सपनों को साकार करने का।

आप सभी को नए शैक्षणिक सत्र के लिए ढेरों शुभकामनाएँ! स्नेह सहित.....

तुम्हारा ही,

त्रिपुरारि राय
संपादक सह ग्राफिक्स डिजाइनर
मध्य विद्यालय रौटी, महिषी (सहरसा)

सम्पादक मंडल

प्रधान सम्पादिका	:-	रूबी कुमारी, उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)
संपादक-सह- ग्राफिक्स डिजाइनर	:-	त्रिपुरारि राय, म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)
सह-संपादिका	:-	ज्योति कुमारी, म.वि. भनरा, (बाँका)
आमुख पृष्ठ सज्जा	:-	राजेश कुमार, फारबिसगंज कॉलेज (B.Ed विभाग), अररिया
सहयोगकर्ता	:-	1. मृत्युंजयम् , म.वि.नवाबगंज, समेली, (कटिहार) 2. रंजेश कुमार, प्रा. वि. छुरछुरिया, फारबिसगंज,(अररिया) 3. केशव कुमार, बु.वि. बखरी, मुरौल, मुजफ्फरपुर
संरक्षक	:-	1. शिव कुमार, संस्थापक- टीचर्स ऑफ़ बिहार 2. ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन, ToB तकनीकी टीम लीडर

-: स्थाई स्तंभ :-

1. प्रधान सम्पादक की कलम से
2. सम्पादकीय
3. आवरण कथा
4. कविता
5. कहानी
6. हँसो रे बाबू
7. बूझो तो जानें
8. वैज्ञानिक कारण
9. कहानी बनाओ प्रतियोगिता
10. अखबारों की नजर में हम
11. उभरते सितारे
12. तकनीकी कोना
13. बालमन
14. विद्यालयी क्रियाकलाप
15. क्या आप जानते हैं ?
16. अंग्रेजी सीखें
17. ड्राइंग / पेंटिंग
18. उभरते सितारे
19. फोटो ऑफ़ द मंथ
20. हिंदी ज्ञान
21. प्रमुख दिवसें
22. प्रेरक प्रसंग
23. रोचक तथ्य
24. खेल-खेल में योग
25. तुम भी बनाओ.....
26. आपकी बात आपकी जुबानी

प्रेरक प्रसंग

"कलम का जादू"

एक छोटे गाँव का लड़का था – नाम था आरव। वह पहली बार स्कूल जा रहा था। उसके माता-पिता गरीब थे, लेकिन उन्होंने आरव को पढ़ाने का पक्का इरादा किया था। स्कूल के पहले दिन आरव घबराया हुआ था—नई जगह, नए लोग, कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

शिक्षक ने कक्षा में सब बच्चों को एक-एक पेंसिल दी और कहा, "इस पेंसिल में दुनिया बदलने की ताकत है।" बच्चे हैरान हो गए। शिक्षक मुस्कराए और बोले, "जिस हाथ में यह पेंसिल होती है, वह हाथ कुछ भी लिख सकता है—ज्ञान, सपने, भविष्य और सफलता।"

आरव ने उस दिन से यह बात दिल में बैठा ली। वह रोज मेहनत करने लगा, पढ़ाई में आगे बढ़ता गया। वर्षों बाद वही आरव एक बड़ा वैज्ञानिक बना और गाँव का नाम रोशन किया।

सीख: शिक्षा एक ऐसा दीपक है जो अंधकार को मिटा देता है। स्कूल की पहली सीढ़ी ही सफलता की ओर पहला कदम है। आज जो किताब और पेंसिल आपके हाथ में है, वही कल आपका भविष्य बनाएगी।

:- NPS कोयलास्थान
महिषी, सहरसा

****

शुभकामना सन्देश

नन्हे कदमों से जब बच्चे विद्यालय की चौखट पर पहला कदम रखते हैं, तो उनके मन में नये सपनों, जिज्ञासाओं और उम्मीदों की एक दुनिया बस जाती है। हमें उनके सपनों को उड़ान भरने के लिए उनके पंखों को सबल करना होगा। विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, अनुशासन और सृजनात्मकता की पहली पाठशाला होता है।

ToB बालमंच ने हमेशा से बच्चों की कल्पनाओं को शब्दों, चित्रों और रंगों में ढालकर एक सुंदर मंच प्रदान किया है। चित्र, कहानी, कविता और चुटकुलों के माध्यम से बच्चों के मन को सहलाना और उन्हें प्रेरणा देना – यही इसकी खासियत है।

"विद्यालय में प्रवेश" जैसे खूबसूरत विषय पर विशेषांक निकालने के लिए **ToB** बालमंच को ढेरों शुभकामनाएं। यह अंक बच्चों के मन में नए सत्र के लिए उत्साह और उमंग भर दे, यही हमारी कामना है।

" बच्चों की मुस्कान, उनकी उड़ान,
ToB बालमंच के साथ रहे सदा महान! "

सुशील कुमार
प्रखंड विकास पदाधिकारी
– सह –
प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी , महिषी (सहरसा)

ToB School Activity Link.....

1. https://www.facebook.com/share/v/15D5itaCks/
2. https://www.facebook.com/share/v/16A91KLZZJ/
3. https://www.facebook.com/share/v/1MHQKUYhuB/
4. https://www.facebook.com/share/v/1BenYb363b/
5. https://www.facebook.com/share/v/1622QjCWe6/
6. https://www.facebook.com/share/v/15x5cFNCfW/

सूरज कुमार, म.वि.राजेंद्र पार्क डुमरिया समेली

म. वि. सुरीगाँव बायसी, पूर्णियाँ बिहार के बच्चों ने बनाया

कहानी बनाओ

दिए गए चित्र को देखें और उसपर एक सुन्दर सा कहानी लिख कर हमें भेजें | उत्कृष्ट कहानी को अगले अंक में छापा जाएगा |कहानी के साथ अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम अवश्य लिखें |

बूझो तो जानें..

वो क्या है जो खुद नहीं चलता,
पर चलाने से दुनिया चलता?

सोचिए...

उत्तर: "पैसा"

हंसो रे बाबू

- टीचर: बताओ बच्चों, नींद क्यों आती है?

गोलू: ताकि हम सपनों में भी होमवर्क कर सकें!

- मोनू डॉक्टर के पास गया –

मोनू: डॉक्टर अंकल, मुझे भूलने की बीमारी हो गई है!

डॉक्टर: ये बीमारी आपको कब से है?

मोनू: कौन सी बीमारी?

क्या आप जानते हैं ?

1. पानी बिना इंसान 3 दिन, लेकिन बिना नींद के ज्यादा नहीं!

इंसान बिना पानी के लगभग 3-5 दिन तक जीवित रह सकता है, लेकिन बिना नींद के सिर्फ कुछ ही दिनों में दिमाग काम करना बंद कर सकता है।

2. समुद्र के 80% हिस्से का कोई नहीं जानता!

धरती का लगभग 70% भाग समुद्र से घिरा है, लेकिन इसका 80% हिस्सा अब तक अनदेखा और अज्ञात है।

3. केला असल में एक फल नहीं, बल्कि एक जड़ी-बूटी है!

बोटैनिकली, केले का पौधा पेड़ नहीं होता, बल्कि यह दुनिया की सबसे बड़ी जड़ी-बूटी में से एक है!

4. जब आप छींकते हैं, तो दिल एक मिलीसेकंड के लिए रुक जाता है!

छींक आने के दौरान शरीर में इतना दबाव बनता है कि दिल की धड़कन एक क्षण के लिए धीमी हो जाती है।

अंग्रेजी सीखें: Letter Writing

भगवान आपको आशीर्वाद दे!	God bless you!
वाह!, गज़ब!, बहुत बढ़िया!	Wow!, Wonderful!
भगवान की दया से!, प्रभु की कृपा से!	By God's grace !
कितने दुख की बात है!, कितना दुखद!	How sad!, How tragic!
उसकी इतनी हिम्मत!	How dare he!
ओह प्यारे! (जब दिल में प्यार उमड़े)	Oh honey!, Oh dear!
बहुत बड़ी गलती!	Terrible mistake!
अविश्वसनीय!, बहुत ही जबरदस्त!	Incredible!, Amazing!, Awesome!
बकवास!	Absurd!, Nonsense ! Aweful!
भगवान का शुक्र है!	Thank God!
ये हुई न बात! (जीत की ख़ुशी)	Hurry!, That's it!
नज़र न लगे!	Touch wood!, Finger crossed!
ज़रुर!, क्यों नहीं! पक्का!	Sure!, Why not!, of course!
शाबास!	Well done!
क्या खबर है! (ख़ुशी से कहना)	What a news!
सच में! (चैंकते हुए)	Really!, Is it!
बहुत-बहुत धन्यवाद!	Thanks a lot!
बधाई हो!	Congratulations!
क्या आइडिया है!	What an idea!

Copyright 2021 Success Darpan

मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम : सुरक्षित शनिवार

सड़क सुरक्षा, आपदा के साथ नागरिकता का भाव के बारे में भी पढ़ेंगे बच्चे

इस सत्र में शिक्षा विभाग ने बच्चों को नया कुछ पाठ्यक्रम जोड़ा है। इसमें बच्चों को बचपन से ही नागरिकता का भाव पढ़ाया जाएगा। बच्चों को ट्रैफिक नियमों, स्वच्छता नियमों, सार्वजनिक संपत्ति की देखभाल, पार्क, सड़क, और अन्य सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान से बचाना, दूसरों के प्रति सम्मान, दूसरों के विचारों, मान्यताओं और अधिकारों का सम्मान करना आदि के बारे में पढ़ाया जाएगा। छोटे बच्चों या निचली कक्षा के बच्चों को एक सेट में दस किताबें मिलेंगी। वहीं ऊंची कक्षाओं के बच्चों को एक सेट में 20 किताबें मिलेंगी। इसके साथ ही बच्चों को डायरी भी दी जाएगी। जिसमें होमवर्क आदि नोट करेंगे। सुरक्षा को और विस्तृत रूप से पढ़ना होगा। इससे पहले सड़क सुरक्षा की टॉपिक कम होती थी। लेकिन इसकी जरूरत को देखते हुए इसमें और भी नई चीजें जोड़ी गई हैं। इसमें सुरक्षित गति से वाहन चलाना, सीट बेल्ट और हेलमेट पहनना और यातायात नियमों का पालन करना शामिल है।

फोटो ऑफ़ द मंथ.....

महत्वपूर्ण दिवस

1 अप्रैल **मूर्ख दिवस (April Fool's Day)**

2 अप्रैल **विश्व ऑटिज़्म जागरूकता दिवस**

4 अप्रैल **अंतरराष्ट्रीय खान विरोधी दिवस (International Day for Mine Awareness)**

5 अप्रैल **राष्ट्रीय समुद्री दिवस (National Maritime Day)**

7 अप्रैल **विश्व स्वास्थ्य दिवस (World Health Day)**

10 अप्रैल **विश्व होम्योपैथी दिवस**

11 अप्रैल **राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस**

13 अप्रैल **जलियाँवाला बाग हत्याकांड दिवस (1919)**

14 अप्रैल **डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती राष्ट्रीय समानता दिवस**

17 अप्रैल **विश्व हीमोफीलिया दिवस**

18 अप्रैल **विश्व धरोहर दिवस (World Heritage Day)**

21 अप्रैल **राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस**

22 अप्रैल **पृथ्वी दिवस (Earth Day)**

23 अप्रैल **विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस**

24 अप्रैल **राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस**

25 अप्रैल **विश्व मलेरिया दिवस**

26 अप्रैल **विश्व बौद्धिक संपदा दिवस (World Intellectual Property Day)**

28 अप्रैल **विश्व कार्यस्थल सुरक्षा और स्वास्थ्य दिवस**

30 अप्रैल **अंतरराष्ट्रीय जैज़ दिवस**

हिंदी ज्ञान: हिंदी व्याकरण

परिभाषा: "हिंदी भाषा के शुद्ध, सुंदर और सही प्रयोग के नियमों का अध्ययन 'व्याकरण' कहलाता है।"

- व्याकरण वह शास्त्र है जो यह बताता है कि शब्दों और वाक्यों का निर्माण और प्रयोग कैसे किया जाए।
- यह भाषा को व्यवस्थित और अनुशासित बनाता है।

हिंदी व्याकरण के मुख्य भेद (भाग):

1. वर्ण विचार :- इसमें **वर्णों (अक्षरों)** का अध्ययन किया जाता है। जैसे: स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, आदि।

2. शब्द विचार :- इसमें **शब्दों के प्रकार और भेद** का अध्ययन किया जाता है। जैसे: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, आदि।

3. रूप विचार (कारक विचार) :- इसमें **शब्दों के रूप-परिवर्तन** और **कारक** देखे जाते हैं। जैसे: राम-राम का-राम को-राम से आदि।

4. वाक्य विचार :- इसमें **वाक्य के भेद** और उनका निर्माण देखा जाता है। जैसे: सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य।

5. समास :- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने नए शब्द को समास कहते हैं। जैसे: *राजपथ (राजा + पथ)*
भेद: द्वंद्व, द्विगु, बहुव्रीहि, तत्पुरुष, अव्ययीभाव

6. वाक्यांश के लिए एक शब्द :- जैसे: जो जल्दी गुस्सा करे — **चिड़चिड़ा**

7. मुहावरे और लोकोक्तियाँ :-

- मुहावरे: विशेष भाव को प्रकट करने वाले वाक्यांश
- लोकोक्तियाँ: समाज में प्रचलित कहावतें

8. काल, लिंग, वचन, कारक, वाच्य आद :-

- ये सभी शब्दों और वाक्यों के सही प्रयोग से संबंधित होते हैं।

जैसे: **काल:** वर्तमान, भूत, भविष्य
लिंग: पुल्लिंग, स्त्रीलिंग
वचन: एकवचन, बहुवचन
कारक: कर्ता, कर्म, करण, आदि

क्रमशः

आओ योग सीखें..... ब्रह्मचर्यासान

ब्रह्मचर्यासा : यह आसान रात्रि भोजन के बाद, सोने से पहले करने से विशेष लाभ होता है। ब्रह्मचर्यासन के नियमित अभ्यास से ब्रह्मचर्य पालन में सहायता मिलती है तथा अखंड ब्रह्मचर्य की सिद्धि होती है। इसलिए योगियों ने इनका नाम ब्रह्मचर्यासन रखा है।

विधि : जमीन पर घुटनों के बल वज्रासन में बैठ जायें तत्पश्चात दोनों पैरों को अपनी अपनी दिशा में इस तरफ फैला दें कि नितम्ब और गुदा का भाग जमीन से लगा रहे। हाथों को घुटनों पर रख के शांत चित बैठे रहें।

लाभ : ब्रह्मचर्य आसन से आत्मा को आंतरिक रूप से शांति, आनंद, प्रेम, ज्ञान, शक्ति, तेज, ओज और विभूति प्राप्त होती है और बाह्य जगत में समृद्धि, स्वास्थ्य, सुख, सम्मान, सेवा, सहयोग और संतोष प्राप्त होता है।

इस आसन के अभ्यास से वीर्य वाहिनी नाड़ी का प्रवाह शीघ्र ही ऊर्ध्वगामी हो जाता है और सिवानी नड़ी की उष्णता कम हो जाती है जिससे स्वप्नदोष आदि बीमारियों को दूर करने में परम लाभकारी आसन है । इस आसन से एकाग्रता में भी वृद्धि होती है। ■

हमारा बिहार

भारत के ईशान विराजे।
कंठ मालिका मणि बन साजे।।
इसकी महिमा है अति भारी।
जनक सुता की धरणी प्यारी।।

देवासुर जब जलधि मथाया।
मंदार को मथनी बनाया।।
चौदह रत्न यहाँ से पाया।
विश्व को अमृत कलश दिलाया।।

शासन का नया अर्थ बताया।
जन को गण का सार सुनाया।।
लिच्वी को गणराज्य बनाया।
दुनिया को नई राह दिखाया।।

विद्यापति की धरा निराली।
इसकी गाथा गौरवशाली।।
देवों ने यहाँ घर बनाया।
ऋषियों ने भी ध्यान लगाया।।

बुद्ध ने ज्ञान यहीं से पाया।
जीवन का आदर्श बताया।।
अष्टमार्ग पर चलना सिखाया।
विश्वशांति का पाठ पढ़ाया।।

चाणक्य की प्रकृति निराली।
लोहा माने दुनिया सारी।।
राजनीति का पाठ पढ़ाया।
आर्यवर्त को समृद्ध बनाया।।

नालंदा है शान हमारी।
इसकी माटी है गुणकारी।।
ज्ञान का यह केंद्र बना था।
अज्ञानता का तिमिर हरा था।।

कितना रम्य राज्य हमारा।
हमको है प्राणों से प्यारा।।
इसकी सदा हम गाथा गाये।
माटी से हम भाल सजाये।।

कुमकुम कुमारी
मुंगेर, बिहार

ख़ुशी में आँसू निकल जाते हैं, क्यों ?

जब हम बहुत ज़्यादा खुश होते हैं और आंसू निकलते हैं, तो इसे "आश्रु प्रतिक्रिया" (tearful response) या "भावनात्मक आंसू" (emotional tears) कहा जाता है। इसका वैज्ञानिक और भावनात्मक दोनों ही पहलू होते हैं:

1. भावनाओं की तीव्रता: बहुत ज़्यादा खुशी, ग़म, गुस्सा या तनाव जैसी गहरी भावनाएं हमारे दिमाग़ को हिला देती हैं। जब खुशी बहुत तीव्र होती है, तब शरीर उसे संतुलित करने की कोशिश करता है — और आंसू एक तरह से उस तनाव को बाहर निकालने का ज़रिया बन जाते हैं।

2. दिमाग़ और तंत्रिका तंत्र की प्रतिक्रिया: हमारा दिमाग़ (खासकर हाइपोथैलेमस) भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करता है। जब खुशी बहुत ज्यादा होती है, तब यह हिस्सा ऑटोनॉमिक नर्वस सिस्टम को एक्टिवेट कर देता है, जिससे लैक्रिमल ग्लैंड्स (आंसू ग्रंथियां) सक्रिय हो जाती हैं।

3. आंसू एक "रिलीफ़ वाल्व" की तरह: कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि आंसू एक "सुरक्षा वाल्व" की तरह काम करते हैं — जब भावनाएं ज़्यादा हो जाती हैं तो शरीर उन्हें आंसुओं के रूप में निकाल देता है ताकि मानसिक संतुलन बना रहे।

4. मनोवैज्ञानिक कारण: खुशी के आंसू कभी-कभी पुराने दर्द, संघर्ष या उम्मीदों के पूरा होने की याद से भी जुड़ जाते हैं। उस पल की भावुकता इंसान को रुला देती है, लेकिन वो आंसू खुशी के ही होते हैं।

:- प्रस्तुतकर्ता
त्रिपुरारि राय

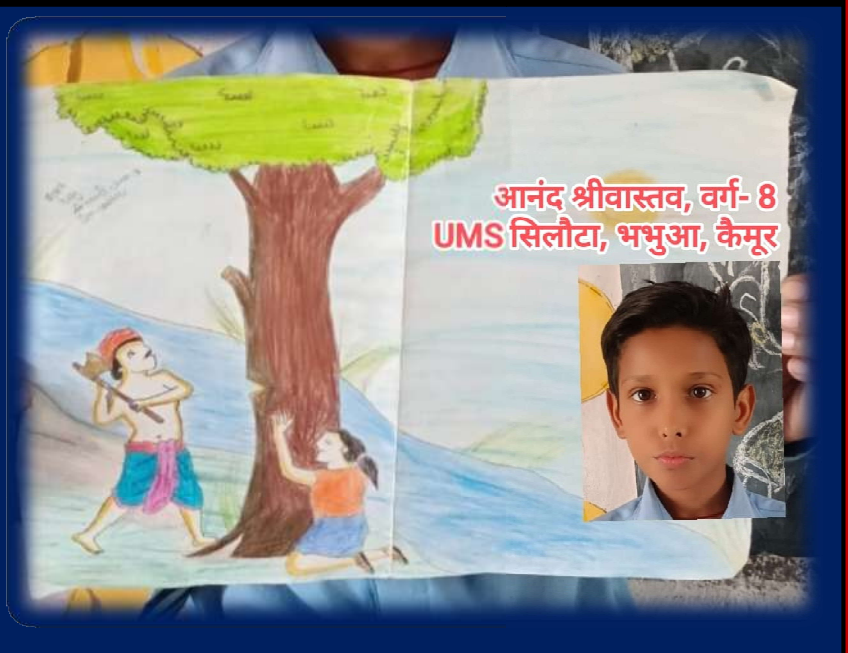

नीचे दिए गए सभी चित्र मध्य विद्यालय बखरी खरकट्टा, समेली (कटिहार) के हैं :-

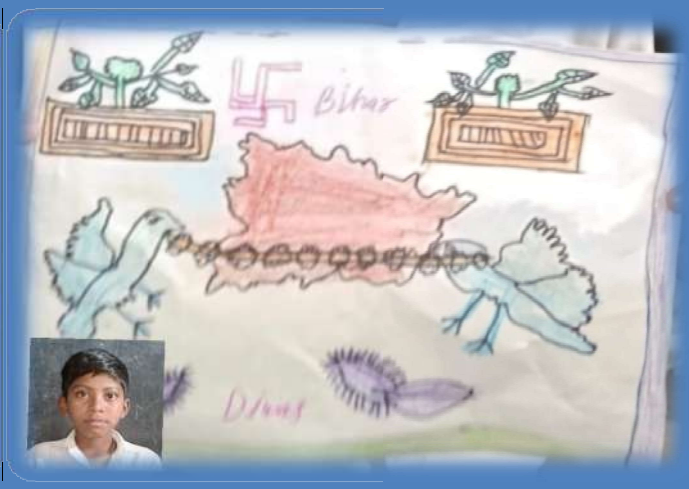

बच्चों आपको TOB बालमंच का ये अंक कैसा लगा? हमें अवश्य बताएं | आप हमें नीचे दी गए किसी भी माध्यम ईमेल या व्हाट्सअप द्वारा सूचित कर सकते हैं |

email- balmanch.teachersofbihar@gmail.com

Whatsapp: 8877318781 (Tripurari Roy)

सम्राट अशोक मौर्य : युद्ध से धम्म तक की यात्रा

✍ सुरेश कुमार गौरव

भारतवर्ष के इतिहास में जब भी एक ऐसे सम्राट की चर्चा होती है जिसने केवल तलवार की धार से नहीं, बल्कि करुणा, शांति और नैतिकता के मूल्यों से सम्पूर्ण राष्ट्र और विश्व को प्रभावित किया — तो वह नाम है सम्राट अशोक महान। वे न केवल एक कुशल विजेता थे, बल्कि आत्मबोध के बाद उन्होंने जो धर्म-प्रेरित शासन चलाया, वह उन्हें अन्य सम्राटों से विलक्षण बनाता है।

बाल्यकाल एवं युवावस्था : अशोक का जन्म लगभग 304 ई.पू. में हुआ। वे मौर्य वंश के महान सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के पौत्र और सम्राट बिंदुसार के पुत्र थे। अशोक का बाल्यकाल राजकुल में शिक्षा, युद्धकला, राजनीति और धर्मशास्त्र के गहन अध्ययन में बीता। वह अत्यंत बुद्धिमान, साहसी और दूरदर्शी थे, किंतु उनके कठोर स्वभाव और स्पष्टवादी प्रवृत्ति के कारण उन्हें बिंदुसार का विशेष स्नेह प्रारंभ में प्राप्त नहीं हुआ। परंतु उनके संगठन कौशल और वीरता ने उन्हें विद्रोहग्रस्त तक्षशिला और अन्य क्षेत्रों के शासन का भार सौंपा। वहाँ उन्होंने अपने नेतृत्व से शांति और व्यवस्था स्थापित की, जो उनकी राज्यकला की परिपक्वता को दर्शाता है।

राजगद्दी और साम्राज्य विस्तार : सम्राट बिंदुसार के निधन के उपरांत अशोक ने लगभग 273 ई.पू. में सत्ता संभाली, किंतु कुछ विद्वानों के अनुसार उनके वास्तविक अभिषेक में चार वर्षों की विलंब हुआ (269 ई.पू.)। अशोक के शासनकाल में मौर्य साम्राज्य अपनी भौगोलिक सीमाओं के चरम पर पहुँचा — उत्तर में हिमालय, दक्षिण में गोदावरी तक, पूर्व में बंगाल से लेकर पश्चिम में हिंदूकुश पर्वत तक उनका प्रताप स्थापित हो गया।

कलिंग युद्ध : एक आत्मबोध की आंधी : सम्राट अशोक के जीवन का सबसे निर्णायक मोड़ 261 ई.पू. में हुआ, जब उन्होंने स्वतंत्र राज्य कलिंग पर चढ़ाई की। युद्ध के बाद भयंकर जनहानि हुई — लगभग एक लाख से अधिक लोग मारे गए, लाखों घायल और निर्वासित हुए। अशोक ने जब युद्ध के बाद उस भीषण दृश्य को देखा तो उनका हृदय भीतर से हिल गया। विजय तो मिली, पर आत्मा हार गई। उन्होंने कहा — "अब मैं दिग्विजय नहीं, धर्मविजय करूंगा।" यही वह क्षण था जिसने एक प्रतापी सम्राट को 'धम्माशोक' बना दिया।

धम्म की अवधारणा और शासन नीति : सम्राट अशोक ने बुद्ध के उपदेशों को आत्मसात किया, परंतु उनका धम्म केवल बौद्ध धर्म का अनुकरण नहीं था । यह था - सत्य, अहिंसा, करुणा, संयम और आत्मशुद्धि का मार्ग। सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता। प्रजा के प्रति मातृवत व्यवहार। युद्ध की बजाय नैतिक संवाद और न्याय पर आधारित शासन। उन्होंने अपने शिलालेखों में प्रजा को 'जनता नहीं, संतान' कहा।

उन्होंने धम्म महामात्र नियुक्त किए — जो जनता के नैतिक मार्गदर्शन के लिए नियुक्त होते थे। यह उनकी प्रशासनिक सूझबूझ और आध्यात्मिक दृष्टि दोनों को प्रकट करता है।

सांस्कृतिक एवं वैश्विक योगदान : सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा। वहाँ राजा तिस्स और जनता ने बौद्ध धर्म को अपनाया। यह पहला उदाहरण था जब भारत का सांस्कृतिक प्रभाव बिना तलवार के विश्व में फैला । अशोक के काल में भारत से अफगानिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, मिस्र, यूनान तक बौद्ध दर्शन की किरणें पहुँचीं। उनका संदेश आज भी "धम्म चक्र प्रवर्तन" के प्रतीक रूप में भारत के राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह में सम्मिलित है।

शिलालेख, स्तंभ और कला : अशोक का शासन लेखन और स्थापत्य की दृष्टि से भी स्वर्णकाल था। उन्होंने ब्राह्मी लिपि में शिलालेख खुदवाए, जो जन-संपर्क का एक क्रांतिकारी रूप था।

सारनाथ का सिंह स्तंभ : सांची, भरहुत, लौरिया नंदनगढ़, गिरनार, दौली, खालाटेकड़ी जैसे स्थानों पर मिले अभिलेख

उनके शासन की नीति, धर्म, समरसता और प्रशासन की झलक देते हैं।

निष्कर्ष : सम्राट अशोक – समय से आगे का शासक

सम्राट अशोक ने सत्ता को सेवा का माध्यम बनाया। वे राजा नहीं, धार्मिक विचारों के संवाहक बने। उनका व्यक्तित्व इस बात का प्रमाण है कि आत्मबल, विवेक और करुणा से इतिहास बदला जा सकता है।

आज जब विश्व संघर्षों, युद्धों और नैतिक विघटन से जूझ रहा है, तब सम्राट अशोक की धम्म नीति हमें पुनः स्मरण कराती है कि "सत्य की विजय तलवार से नहीं, आत्मा की करुणा से होती है।"

समर्पित — इतिहास को दिशा देने वाले उस महान सम्राट को, जिसने युद्ध से धम्म, और सिंहासन से साधना की ओर यात्रा की।

:- सुरेश कुमार गौरव, प्रधानाध्यापक, उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

"सनातन घड़ी"

12:00 बजने के स्थान पर आदित्य लिखा हुआ है, जिसका अर्थ यह है कि सूर्य 12 प्रकार के होते हैं। सूर्य देव के 12 नाम ये हैं: सूर्याय, भास्कराय, रवये, मित्राय, भानवे, खगय, पुष्णे, मारिचाये, आदित्याय, सावित्रे, आर्काय, हिरण्यगर्भाय.

1:00 बजने के स्थान पर ईश्वर लिखा हुआ है। इसका अर्थ यह है कि ईश्वर एक ही प्रकार का होता है। एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति।

2:00 बजने की स्थान पर पक्ष लिखा हुआ है, जिसका तात्पर्य यह है कि पक्ष दो होते हैं पहला कृष्ण पक्ष और दूसरा शुक्ल पक्ष।

3:00 बजने के स्थान पर अनादि तत्व लिखा हुआ है जिसका तात्पर्य यह है कि अनादि तत्व 3 हैं। परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति ये तीनों तत्व अनादि है.

4:00 बजने के स्थान पर वेद लिखा हुआ है, जिसका तात्पर्य यह है कि वेद चार प्रकार के होते हैं -- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

5:00 बजने के स्थान पर महाभूत लिखा हुआ है, जिसका तात्पर्य है कि महाभूत पांच प्रकार के होते हैं। पांच महाभूत हैं :- सत्वगुण, रजगुण, कर्म, काल, स्वभाव"

6:00 बजने के स्थान पर दर्शन लिखा हुआ है। इसका तात्पर्य है कि दर्शन 6 प्रकार के होते हैं । छः दर्शन- सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त के नाम से विदित है।

7:00 बजे के स्थान पर धातु लिखा हुआ है। इसका

सात धातुओं के नाम :-
रस : प्लाज्मा
रक्त : खून (ब्लड)
मांस : मांसपेशियां
मेद : वसा (फैट)
अस्थि : हड्डियाँ
मज्जा : बोनमैरो
शुक्र : प्रजनन संबंधी ऊतक.

8:00 बजने के स्थान पर अष्टांग योग लिखा हुआ है। इसका तात्पर्य है कि योग के आठ प्रकार होते है। योग के आठ अंग हैं :- 1) यम, २) नियम, ३) आसन, ४) प्राणायाम, ५) प्रत्याहार, ६) धारणा ७) ध्यान ८) समाधि.

9:00 बजने के स्थान पर अंक लिखा हुआ है इसका तात्पर्य है कि अंक 9 प्रकार के होते हैं। 1 2 3 4 5 6 7 8 9.

10:00 बजने के स्थान पर दिशाएं लिखा हुआ है। इसका तात्पर्य है कि दिशाएं 10 होती है। दस दिशाएं हैं:- पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान (उत्तर-पूर्व), आग्नेय (दक्षिण-पूर्व), नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम), वायव्य (उत्तर-पश्चिम), उर्ध्व (ऊपर) और अधो (नीचे).

11:00 बजने के स्थान पर उपनिषद लिखा हुआ है। इसका तात्पर्य है कि उपनिषद 11 प्रकार के होते हैं। 11 मुख्य उपनिषद ये हैं: - ईशावास्य उपनिषद, केनोपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मुंडकोपनिषद, माण्डूक्योपनिषद, तैत्तिरीयोपनिषद, ऐतरेयोपनिषद, छान्दोग्योपनिषद, बृहदारण्यकोपनिषद, श्वेताश्वतरोपनिषद. ओम शान्ति !

प्रस्तुतकर्ता:- अभिमन्यु कुमार अभिनन्दन
मध्य विद्यालय खोराबरतर, महिषी (सहरसा)

Ansh kumar, Class-6
U.M.S.DUDAHAN,SIWAN

बालमन

ToB बालमंच मेरी फेवरेट मैगजीन है। मुझे यह पढ़ना बेहद पसंद आता है। इस मैगजीन में मेरी भी ड्राइंग पब्लिश हुई है। मैंने अपने सभी सगे संबंधियों को दिखाया। बहुत ही गर्व की अनुभूति हुई कि हमारे ड्राइंग को कोई देखने वाला नहीं था लेकिन इस मैगजीन के जरिए पूरा बिहार देख रहा है। इस मैगजीन से हमें बहुत कुछ सीखने को भी मिलता है। मैं चाहती हूं कि यह मैगजीन हमेशा ऐसे ही छपता रहे और हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता रहे।

सुमन कुमारी, वर्ग- 8 , (मध्य विद्यालय भनरा, चांदन, बांका)

विहार दिवस पर आयोजित जिला स्तरीय चित्रकला में मानसी कुमारी, वर्ग- 7, कन्या मध्य विद्यालय महिषी, सहरसा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया | चयन के बाद इन्हें राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु पटना भेजा गया | इनकी पेंटिंग ToB बालमंच पर निरंतर प्रकाशित होती है | ToB बालमंच टीम की तरफ से इनको हार्दिक शुभकामनाएं ...

Pridhi Kumari, Class 6
UMS Silouta, Bhabhua, Kaimur

Ankita Kumari, Class 3
UMS Silouta, Bhabhua, Kaimur

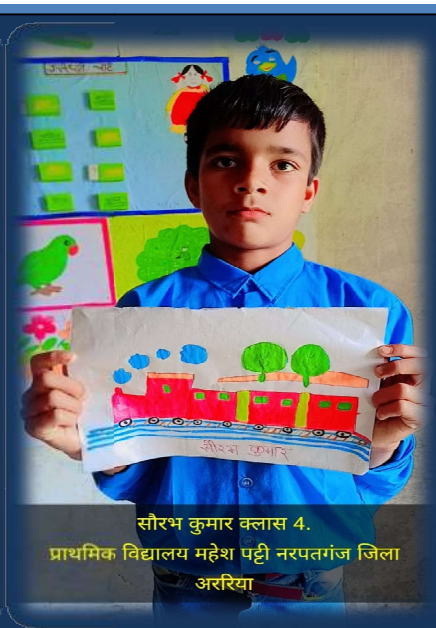
सौरभ कुमार क्लास 4.
प्राथमिक विद्यालय महेश पट्टी नरपतगंज जिला अररिया

कविता : हम बच्चे हैं मन के सच्चे

हम बच्चे हैं मन के सच्चे
छोटे- नन्हे प्यारे बच्चे |

सुबह उठते ही शोर मचाते
अपने कामों में लग जाते
शौच क्रिया से निर्मित होकर
दांत सफाई में लग जाते
हल्का-फुल्का नाश्ता करके
फिर पढ़ाई में जुड़ जाते

हम बच्चे हैं मन के सच्चे
छोटे- नन्हे प्यारे बच्चे |

घर से बाहर निकलते ही
गलियों में रौनक छा जाते
छोटे-बड़े सभी लोगों को
अपने पीछे हैं दौड़ाते
खेल-खेल में मित्र बनाते
साथ-साथ सब पढ़ने जाते
पढ़ लिखकर जब घर को जाते
सबके मन में हम बस जाते

हम बच्चे हैं मन के सच्चे
छोटे- नन्हे प्यारे बच्चे |

नाम रंजीत कुमार, कक्षा-5 प्राथमिक विद्यालय लक्ष्मीपुर, मोहनिया, कैमूर

विश्व स्वास्थ्य दिवस 7 अप्रैल पर विशेष

वर्ष 2025 का थीम- "Healthy beginnings, hopeful features"

प्रस्तुतकर्ता :- गिरीन्द्र मोहन झा

.....विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वास्थ्य की परिभाषा देते हुए कहा है, It is the state of physical, mental, spiritual and social healthy.

.....स्वस्थ शब्द का श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी किया है। उनके कथनानुसार, हर व्यक्ति को स्वस्थ अर्थात् स्वयं में स्थित या आत्मभाव में स्थित होना चाहिए, स्थितप्रज्ञ होते हुए कर्म करना चाहिए।

..... रामधारी सिंह दिनकर रचित रश्मिरथी के प्रथम सर्ग में परशुराम जी, नवयुवक कर्ण से कहते हैं :-

पत्थर सी हो मांसपेशियां लोहे से भुजदण्ड अभय,
नस-नस में लहर आग की, तभी जवानी पाती जय,
विप्र हुआ तो क्या, रक्खेगा रोक अभी से खाने पर,
कर लेना घनघोर तपस्या वय चतुर्थ के आने पर ।

.... दिवा-रात्रि में एक घण्टा भी शरीर की मजबूती, मन की मजबूती पर ध्यान दिया जाय तो पर्याप्त हैं।

बालक-बालिकाएं खेल के मैदान में,
युवजन, व्यायाम, आसन-प्राणायाम में,
वृद्ध-बुजुर्गगण भ्रमण और प्राणायाम में,
यथायोग्य आहार-विहार संग अपने काम में।

..... शिव पंचाक्षर मंत्र(नमः शिवाय) के 108 बार जप, थोड़ी देर ईश्वर-उपासना से भी शारीरिक, मानसिक के साथ आध्यात्मिक लाभ भी होता है। मानव शरीर नाशवान होते हुए भी अत्यंत महत्वपूर्ण और मूल्यवान है।

अकेलापन और एकांत

अकेलापन बहिर्मुखी और एकांत अन्तर्मुखी होता है। महाभारत का एक संवाद है, धर्मक्षेत्र(अपने धर्म, अपने कर्त्तव्य के पथ पर) कुरुक्षेत्र(अपने कर्म के पथ पर) में प्रत्येक व्यक्ति अकेला होता है। मुंशी प्रेमचंद के शब्दों में, "इस विस्तृत संसार में धैर्य ही अपना मित्र, बुद्धि ही पथ-प्रदर्शक और आत्मावलंबन ही सहायक है।"

वास्तव में कोई व्यक्ति अकेला नहीं है, उसके साथ उसके पूर्वकृत कर्म, वर्तमान कर्म, अनुवांशिकी गुण(कुल-आचार या कुल-परम्परा), शरीर, बुद्धि, पैसा, विद्या, विचार, विवेक और अनुभव होता है। आत्मा रूप से प्रभु हर किसी के भीतर रहते हैं और पग-पग पर मार्गदर्शन करते हैं। सत्संग और विवेक उनकी आंखें होती हैं। उसे अपने आराध्य पर पूर्ण विश्वास होता है। कहते हैं, "ये न सोचें कि मैं अकेला हूं, अपितु ये सोचे कि मैं अकेले ही काफी हूं।" स्वामी विवेकानंद के शब्दों में, "ईश्वर में आस्था रखते हुए कर्म करते चलो।" मोबाइल, संगणक(कम्प्यूटर) आदि के युग में कोई अकेला रह ही नहीं सकता। किसी भी महान कार्य की शुरुआत अकेले ही करनी पड़ती है। कारवां पीछे साथ लगता है। जैसा कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है, "एकला चलो रे ।"

एकांत अन्तर्मुखी शब्द है। पंचवटी में मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है, "कोई पास न रहने पर भी जन-मन नहीं रहता, आप आपकी है सुनता, आप आप से है कहता ।" कहते हैं, "वार्तालाप से बुद्धि विकसित होती है, किन्तु प्रतिभा की पाठशाला तो एकांत ही है।" थामस अल्वा एडीसन ने कहा है, "सबसे अच्छा चिंतन एकांत में किया गया है और सबसे बुरे काम उथल-पुथल में हुआ है।"

गिरीन्द्र मोहन झा, +२ भागीरथ उच्च विद्यालय, चैनपुर-पड़री, सहरसा

अख़बारों के नजर में हम .....

स्कूलों में शत-प्रतिशत बच्चों के नामांकन के लिए निकाली गयी जागरूकता रैली

प्रतिनिधि, महिषी

क्षेत्र के महिसरहो पंचायत के मध्य विद्यालय बलुआहा के छात्र-छात्राओं ने गुरुजनों के सानिध्य में पोषक क्षेत्र के सभी सड़कों व गलियों में जागरूकता रैली निकाल आमजनों से शिक्षा से वंचित शत प्रतिशत बच्चों के नामांकन की अपील की. बीडीओ सह प्रभारी बीईओ सुशील कुमार, स्थानीय मुखिया सह विद्यालय की प्रधान अध्यापिका रीना कुमारी व प्रधान अध्यापक विकास कुमार ने हरी झंडी दिखा रैली को रवाना किया. रैली के समापन समारोह को संबोधित करते प्रधान अध्यापक विकास कुमार ने कहा कि शिक्षा का अधिकार हमारा मौलिक अधिकार है. सरकार बच्चों को मुफ्त में किताबें देती है. पोशाक व छात्रवृत्ति दे

जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखा रवाना करते बीडीओ व मुखिया.

सभी वर्ग विशेष को शिक्षित बनाना चाह रही है. विद्यालय के शिक्षक अच्छी पाठन व्यवस्था में सतत क्रियाशील रहते हैं. विद्यालय से वंचित बच्चों के अभिभावक अपने बच्चों का नामांकन कराएं व नियमित विद्यालय भेजना सुनिश्चित करें. बीडीओ सुशील कुमार व मुखिया रीना कुमारी ने विद्यालय प्रशासन के प्रयास को सराहनीय कदम बताते कहा कि शिक्षा से बच्चे अपने स्वर्णिम भविष्य का निर्माण कर सकेंगे. मौके पर विद्यालय के सभी शिक्षक व दर्जनों अभिभावक मौजूद थे.

महिषी की समिता को भाषण में जिले में मिला तृतीय स्थान

महिषी,एक संवाददाता । महिषी की बेटी समिता ने गत दिनों सहरसा में जिला स्थापना दिवस के अवसर पर प्रशासन द्वारा आयोजित जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में तृतीय स्थान पाकर गांव सहित प्रखण्ड का नाम जिला स्तर पर रौशन किया है।

उसकी इस सफलता से जहां उसके परिजनों व ग्रामीणों में खुशी है, वहीं उसके विद्यालय में भी हर्ष का माहौल व्याप्त है। कन्या मध्य विद्यालय की वर्ग सात की छात्रा महिषी निवासी अविनाश कुमार एवं सुषमा कुमारी ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से यह स्थान प्राप्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार समिता ने

सफलता से उसके परिजनों और ग्रामीणों में खुशी का माहौल दी

सहरसा की सांस्कृतिक विरासत एवं धार्मिक धरोहर विषय पर अपना भाषण प्रस्तुत किया। उसकी इस सफलता पर पंचायत की मुखिया सोनी कुमारी, सरपंच दुर्गा कुमारी, पंसस आशुतोष झा एवं इन्द्र कुमार दास ग्रामीण पिनाक चौधरी, राकेश चौधरी ने बधाई दी।

चित्रकला : राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में मानसी होगी शामिल

सहरसा . आगामी 22 मार्च को होने वाले बिहार दिवस पर राज्य स्तर पर होने वाली विभिन्न प्रतियोगिता को लेकर मंगलवार को जिला स्कूल में बच्चों के बीच जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित की गयी. जिसमें चित्रकला में वर्ग छह एवं आठ के समूह में कन्या मध्य विद्यालय महिषी की मानसी कुमारी ने जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त की. जो पूरे विद्यालय परिवार के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे गांव के लिए गौरव की बात रही. अब मानसी 22 मार्च को बिहार दिवस पर पटना में अपना प्रदर्शन करेगी. शिक्षिका रजनी कुमारी ने बताया कि अपर मुख्य सचिव शिक्षा विभाग के पत्र के आलोक में पिछले पांच मार्च को विद्यालय स्तर पर थीम उन्नत बिहार विकसित बिहार पर गणित ओलंपियाड, क्विज व चित्रकला प्रतियोगिता कराया गया था. जिसमें प्रत्येक विधा में विद्यालय की क्रमशः श्रुति कुमारी, साक्षी कुमारी व मानसी कुमारी प्रथम स्थान प्राप्त किया था. प्रखंड स्तर पर मानसी कुमारी चित्रकला में प्रथम रही थी. वहीं मंगलवार को जिला स्तर पर भी मानसी

मानसी को सम्मानित करते प्रधानाचार्य.

सफल रही. जो आगामी 22 मार्च को राज्य स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेगी. उन्होंने कहा कि एक शिक्षिका के रूप में उनके विद्यालय से मानसी का चयन होना गौरव की बात है. वहीं मानसी की इस सफलता पर प्रधानाचार्य ने शुभकामना देते कहा कि वह राज्य स्तर पर भी सफल होगी एवं जिले को अवश्य गौरवान्वित करेगी.

उभरते सितारे

जिनको भी प्रशस्ति-पत्र मिल रहा है उनका लिस्ट इस लिंक पर उपलब्ध है :- https://www.teachersofbihar.org/award

नामांकन जागरुकता गीत

समग्र शिक्षा अभियान आइल बा
चारों ओर उजियार।
शिक्षा शब्द के जे-जे समझींह
सपना होइह साकार।२

छः से चौदह बरिस के उमरीय
इनका से रखीह लगाव हो,
बेटा ही बेटी के भेजीह स्कूलीया,
जनी करीह विलगाव हो।
जाति धरम के भेद मिटइह
बदल जइह विचार।
शिक्षा शब्द के जे.....

मुफ्त में बबुअन के नमवा लिखइह
मुफ्त में मिलीह किताब हो,
एकता के रंग में सब रंगइह,
पहीनी के जइह जब पोशाक हो,
ईर्ष्या घृणा दूर होइह
सबका से करीह प्यार।
शिक्षा शब्द के जे .....

ज्ञान के दियना जरी जब घर -घर
रौशन होई तब नाम हो,
खुश होई दिलवा हर्षित मनवा
लगन रही सुबह -शाम हो।
गांधी भीम राव जइसन बनीह
महनवा
देश से मिटइह अत्याचार।

शिक्षा शब्द के जे -जे समझींह
सपना होइह साकार।

संगीता कुमारी
उ. म. वि. अर्री, मोहनिया, कैमूर

Thanks for a view.